तारीख: 25-07-2023

अल्प वर्षाकालीन आपात कृषि सलाह

जैसा कि प्रदेश में मौनसूनी वर्षा में लगभग 45 प्रतिशत तक की कमी देखी जा रही है, भारत मौसम विज्ञान विभाग के पटना केंद्र द्वारा प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार 25 से 28 जुलाई 2023 तक प्रदेश में अल्प वृष्टि का दौर जारी रहेगा। इसलिए खरीफ के इस मौसम में किसानों को सलाह दी जाती है कि कृपया-

- खेतों की मेडबंदी तथा दरारों की मरम्मत कर लें ताकि पानी के रिसाव को कम किया जा सके और वर्षा एवं सिंचाई के जल का संचय लंबे समय तक किया जा सके।
- खेतों में खड़ी फसलों जैसे धान, मक्का, अरहर, रागी और बाजरा की फसल को नष्ट होने से बचाने हेतु जीवन रक्षक सिंचाई अवश्य सुनिश्चित करें।
- जहाँ धान की रोपाई हो चुकी है, फसल को सिंचाई द्वारा पानी दें अन्यथा अत्यधिक खरपतवार उगने और पानी की कमी से फसल नुकसान झेलना पड़ सकता है।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु कोनोवीडर द्वारा अथवा हाथों से गुड़ाई करें। खेत मे पर्याप्त नमी के बाद, लगभग 25 से 30 दिन की हो चुकी धान की फसल में खरपतवारनाशी दवा जैसे बिसपैरीबैक सोडियम/ नोमीनिगोल्ड का 25 ग्राम प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव कर सकते हैं।
- जो किसान अब भी धान की सीधी बुवाई करना चाहते है तो कम अवधि वाली (90-100 दिन) सूखारोधी प्रजातियों (अंजलि, वंदना, तुरंता, प्रभात इत्यादि) का चयन करें।
- पूर्णतया वर्षा आधारित क्षेत्रों में फसलों पर 2 % यूरिया (320 ग्राम यूरिया को 16 लीटर पानी में घोल कर) का छिड़काव करें।
- फलीदार सब्जियों में दाना भरने की अवस्था में पर्याप्त सिंचाई करें। ऊपरी और मध्यम भूमि पर भिंडी की बुवाई की जा सकती है।
- अमरूद और केले में मिट्टी की नमी बनाए रखने हेतु मलचिंग और सिंचाई कर सकते है। नए फलदार पौधों को लगाने ले पूर्व खेत में एक हल्की सिंचाई अवश्य करें।
- पशुओं को कृमिनाशक दवाएं पिलाएं और इसे 3 महीने के अंतराल में पुनः दुहराएं। इस मौसम में पशुओं को HS, BQ एवं FMD रोगों का टीकाकरण अवश्य करवाएं।
- पशुओं को उचित मात्र में सूखा एवं हरा चार (गेहूँ का भूसा, इत्यादि) आवश्यकतानुसार देना चाहिए ताकि पशुओं में दूध देने की उत्पादकता बनी रहे। चारा/ फ़ीड में मिनरल मिक्सचर 40 ग्राम प्रति दिन के हिसाब से देना चाहिए, ताकि पशुओं को संतुलित आहार मिलता रहे।
- मछली प्रजनन के इस मौसम में ठंडे पानी की व्यवस्था बना कर रखें, ताकि प्रजनन हेतु जलीय तापमान को नियंत्रित किया जा सके। पानी की कमी रहने पर उसी पानी का पुनः उपयोग करें, अर्थात मछली प्रजनन हेतु तालाब या बोरिंग से लिए गए पानी का पुनः तालाब में संचय करें।
- एज़ोला कल्चर का उपयोग करें क्योंकि यह नमी को बनाए रखता है तथा मछली के लिए फ़ीड के तौर पर भी उपयोग होता है।
- इस समय किसान ऊपरी जमीन में धान के स्थान पर उरद (पंत उरद-19, पंत उरद-31, डब्लू बी यू 108, डब्लू बी यू 109), मूंग (सम्राट, आई पी एम 2-3, एच यू एम-16), तिल (कलिका, कृष्णा, प्रगति तिल) एवं अरहर (आई पी ए 203, पुसा 1, मालवीय- 13, राजेन्द्र अरहर-1) की बुवाई कर सकते हैं।
- किसान बंधु मौसम पूर्वानुमान, चेतावनी और कृषि परामर्श की नियमित सेवा हेतु मेघदूत एवं दामिनी मोबाइल एप का उपयोग करें।